



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नई निकट मासिक	11.11.21	५	३-४

# खेतीबाड़ी • एचएयू के सायना नेहवाल संस्थान के वैज्ञानिक किसानों को दे रहे सलाह नवंबर, दिसंबर में प्रो-ट्रे नसरी विधि से उगाएं सज्जियां, 120 विवंटल प्रति एकड़ ले सकते हैं टमाटर की पैदावार

उत्तरशील प्रजाति: टमाटर की  
हिसार ललित, अरुण और  
बैंगन की श्यामल, हिसार प्रगति

महबूब अली | हिसार

नवंबर से दिसंबर तक प्रदेश के किसान प्रो-ट्रे नसरी विधि से सज्जियों की पैदावार बिना मिट्टी के कर मुनाफा कमा सकते हैं। इस विधि से अधिक पैदावार मिलेगी। फसल के रोग ग्रस्त होने का भी खतरा कम होगा। एचएयू के सायना नेहवाल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी ट्रेनिंग एंड एज्केशन के सहायक वैज्ञानिक डॉ. देवेंद्र सिंह ने बताया कि प्रो-ट्रे विधि से टमाटर की उत्तरात किस्म ललित, अरुण की को उगाकर 100 से लेकर 120 विवंटल प्रति एकड़ तक पैदावार पाई जा सकती है। इसी तरह बैंगन की हिसार श्यामल, हिसार प्रगति और बीआर 112 किस्म उगाकर 100 से 125 विवंटल प्रति एकड़, मिर्च की हिसार शक्ति, हिसार विजय किस्म उगाकर 40 से लेकर 50 विवंटल प्रति एकड़, मटर की अरकल, पीबी 89 किस्म उगाकर 20 से 30 विवंटल प्रति एकड़, प्याज की हिसार बन, पूमा रेड किस्म उगाकर 100 विवंटल प्रति एकड़, पालक की एचएस 23, ओलाशीन, जोबनेर ग्रीन, की किस्म उगाकर प्रति एकड़ 32 से लेकर 40 विवंटल तक पैदावार पाई जा सकती है। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज का कहना है कि गोली के माध्यम से भी प्रदेश के किसानों को प्रो-ट्रे नसरी विधि के बारे में जानकारी दी जा रही है।

### जानिए... प्रो-ट्रे नसरी तैयार करने की विधि

प्रो-ट्रे नसरी तैयार करने के लिए मिट्टी का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। इसमें कोकोपीट, वर्मीकूलाइट, पर लाइट का प्रयोग करते हैं। आरेभ में किसान सिर्फ कोकोपीट में भी प्रो-ट्रे नसरी आसानी से तैयार कर सकते हैं। कोको पीट की १ या ५ किलोग्राम की ईट बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इस ईट को ७-८ घंटे तक दो से ढाई गुना पानी में फिंगर क्रॉकर रखें और फिर सोलानेसीयस सज्जियों को ९८ सेल और कुकर बीट्स को ५० सेल वाली प्रो-ट्रे में बुवाई करें। दस ट्रे को एक के ऊपर एक रखकर (बीच में एक बारीक



प्रो-ट्रे नसरी विधि से उगाई गई सज्जियां।

दें। पांचवें दिन पॉलिथीन हटाकर ट्रे खोल दें और हल्का पानी रोज़ दें। बाद में मक्खी रोधक जाली के अंदर ट्रे को स्थानांतरित करें। ट्रे को जमीन में न रखकर ऊंचे स्टैंड पर रखें। पंद्रह दिन के बाद घुलनशील खाद सिंचाई वाले पानी के साथ दे सकते हैं। फूंदी या पौध के जड़ से मरने से बचाने के लिए बैंबस्टीन को २ ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर ड्रिंचिंग करें। इस तरीके से नसरी कार्य करने से ३०-३५ दिनों में मिर्च बैंगन, टमाटर आदि की पौध तथा २०-२२ दिनों में कहू वर्गीय फसलों की नसरी तैयार की जा सकती है।

**प्रो-ट्रे नसरी के लाभ :** प्रो-ट्रे में तैयार पौध खेत में तैयार पौध से कई तरह से बेहतर होती है। संरक्षित वातावरण में रोगहित और उच्चगुणवत्ता वाली पौध तैयार की जा सकती है। इसके अलावा प्रो-ट्रे में बीज का अंकुरण और जमाव अच्छा होता है, जड़ों को पर्याप्त स्थान मिलने से विकास बेहतर होता है। मिट्टी रहित विधि के इस्तेमाल से बहुत सारी बीमारियाँ, कीटों से बचाव हो जाता है। हम समय से पूर्वी भी नसरी तैयार कर सकते हैं। ऑफ सीजन सब्जी उत्पादन कर पौध और सब्जी का अच्छा बिक्री मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। रोजगार के रूप भी में प्रो-ट्रे नसरी उत्पादन एक लाभकारी व्यवसाय है और थोड़े दिनों में अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

### नसरी में इन सज्जियों को उगाया जा सकता है

- टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च।
- कहूवर्गीय सज्जियों में लौकी, कहू, करेला, तरबज, खरबजा, ककड़ी
- प्याज व गोभीवर्गीय सज्जियों में फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली आदि।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अग्रीत समाचार	12. 11. 21	५	२-५

### एचएच वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

हिसार, 11 नवम्बर (देवानंद सोनी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समाप्त



प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद प्रतिभागी। मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदानी में डिजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की ऊर्जक क्षमता में बढ़ोतारी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढाँगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के

युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-युवतियां स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बेताब हैं। इनी कड़ी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर वे स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफेद बटन मशरूम (अक्तूबर से फरवरी), ढाँगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धान के पुवाल की मशरूम (जुलाई से अक्तूबर) को उगाकर सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चूध, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
प्रौद्योगिकी	12-11-21	५	१-२



प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद प्रतिभागी।

एच.ए.यू. के वैज्ञानिकों ने दिया प्रशिक्षण

### 'फसल अवशेष जलाने की बजाय खुर्ब उत्पादन में करें उपयोग'

हिसार, 11 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित 3 दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया।

प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। वैज्ञानिकों का कहना था कि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की

कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूँ और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदानी में इजाफा होगी बल्कि कृषेषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की ऊर्वरक क्षमता में बढ़ाती होती है।

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा, डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चुध, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12-11-21	५	७-४

### फसल अवशेष का प्रयोग खुब उत्पादन में करने दी सलाह

जागरण संवददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण का आयोजन कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज के दिशा-निर्देश में विस्तार शिक्षा निदेशक डा. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करें तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा, बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है।

खुब में यह पाए जाते हैं पोषक तत्व : विज्ञानियों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुंबों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुंबों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले गोंगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते

#### शिविर

- मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण का समाप्त
- किसानों से अवशेष न जलाने की अपील की

#### लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतिया इसे रख-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं। प्रशिक्षण के आयोजक डा. सरीश कुमार ने बताया कि डा. राकेश तुध, डा. निर्मल कुमार, डा. डीके शर्मा, डा. भूपेंद्र सिंह मीजूद रहे।

है। एचएू के पौधे रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
५१११५ मार्च २०२१	१२-११-२१	३	१

**फसल अवशेषों को जलाने के बजाय खुंब उत्पादन में करें यूज**  
हिसार | एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। वैज्ञानिकों ने सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए जागरूक किया। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने के बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा बल्कि कृषीषण की समस्या से भी निजात मिलती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल—पल न्यूज	11.11. 2021		

### सार समाचार

#### एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

पल पल न्यूज़: हिसार, 11 नवंबर (मनमोहन शर्मा)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ाती होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौधे रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

## लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	11.11. 2021		

## मशरूम उत्पादन में फसल अवशेष का करें इस्तेमाल : वैज्ञानिक

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया।। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करें तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की

समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	11.11.21		--

एचएयू में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों ने दी सलाह

## फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग करें

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सामना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौद्योगिक डॉ.आर. काम्होज के दिशा-निर्देश में व विस्तृत शिक्षा निदेशक डॉ. गणेशवास के मानविकीन में किया गया।

इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रौद्योगिक टेक्नोलॉजी में कृषि अवशेषों को कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल



अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करें तो न केवल किसान को आमदनी में इजाफ़ होगी बल्कि कृषिकरण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही

प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की ऊर्जक क्षमता में बढ़ोतारी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगर युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन की कृषि विविधकरण के रूप में अपनाने के लिए

प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि दौगरी व दूधिया खुबीयों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इल्यादि प्रदूष मात्र में पाये जाते हैं। इन खुबीयों में भी कई तरह के अंतर्धीय गुण मौजूद होते हैं जो भूरी में होने वाले योगों के प्रति रोग प्रतिरोधक समता को बढ़ावा देते हैं। एवरेट के पौधे रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, दौंगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का चीज उपलब्ध होता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खड़ी जा सकता है।

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अर्शोक कुमार गोदाना ने बताया कि इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगर युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उकाने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगर युवक-युवतियों स्वयंज्ञान स्थापित करने के लिए बेताव है। इसी कठी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर व स्वयंज्ञान स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में काम बड़ा हो रहा है।

उकाने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इस स्वयंज्ञान के स्वरूप में अपना सबलते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफेद बटन मशरूम (अब्दूबर से फरवरी), दौंगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धन के युवाओं की मशरूम (जुलाई से अक्टूबर) को उकान भारत मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजन डॉ. सरतीश कुमार ने बताया कि डॉ. रमेश चूध, डॉ. निमल कुमार, डॉ. डी. के. शमी, डॉ. भूर्णद सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणाधिकारी को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	11.11.21		

समस्त हरियाणा

pppppppp

ब्रह्मपुत्रिवार, 11 नवम्बर, 2021 - हिसार

## एचएपू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम खुबं उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

समस्त हरियाणा न्यूज  
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथी नेहवाल कृषि व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा विविधकारण के रूप में अपनाने के लिए आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक प्रोसेसिंग किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने यथाया विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। कि दीगरी व दूधिया मुख्यों में भी औटी, प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के विद्यार्थिन, खनिज लवण व अवशेषों परिषिद्ध इत्यादि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण प्रशुर मात्र में जाते हैं। इन खुब्बों में भी कई तरह के औपचार्य युग्म यूकूट होते हैं जो शरीर में ची.आर. कामयोजन के दिशा-निर्देश में व विनाश होने वाले गोंदों के प्रति रोग प्रतिरोध भास्ता को शक्ति देते हैं। एचएपू के वीष्ट दीगरी व दूधिया को मशरूम उत्पादन वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों ने अलगाव दूरी से मशरूम को सफूद बटन मशरूम के अलावा दूरी से मशरूम की प्रतिभागियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को उपलब्ध रहता है और अपनी अवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

कृषि अवशेषों को कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन डन गेहूं और

भान का फसल अवशेष ऐदा होता है। किसान मशरूम के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक अगर फसल अवशेषों को जलाने सभी वज्राय कुमार गोदारा ने यथाया की इस तरह के प्रशिक्षण सपातर आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार विविध एवं अग्रिकृत, युवक व युवतियों इसे राकेश चूध, डॉ. नियंत्र कुमार, डॉ. झू. कं. जामी, कुरुपेण की समस्या से भी निपात मिलती है। मिले। उद्देश्य यथाया कि दिन-निन लोगों में वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफेद को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-



युवतियों बरोजगार स्थापित करने के लिए बैठाए (मार्ग से अपैल), दूधिया मशरूम/धान के पुष्टाल हैं। इसी कड़ी में एचएपू से प्रशिक्षण हासिल कर की मशरूम (जुलाई से अक्टूबर) को उगाकर ये स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी यनने की सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्हें यथाया कि है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया है डॉ.

### प्रशिक्षण

प्रशिक्षण

प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहे हैं



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	11.11.21	--	--

## मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण का समापन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। वैज्ञानिकों ने बताया कि हीमरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचूर मात्र में पाये जाते हैं। प्रशिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	11.11. 2021		

### एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुबं उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के साथना नेटवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा



संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूँ और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदानी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढांगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन

**मशरूम उत्पादन  
तकनीक विषय पर तीन  
दिवसीय प्रशिक्षण का  
समाप्त**

विटामिन, खनिज लवण व अमीनो ऐसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पांध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढांगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है। लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

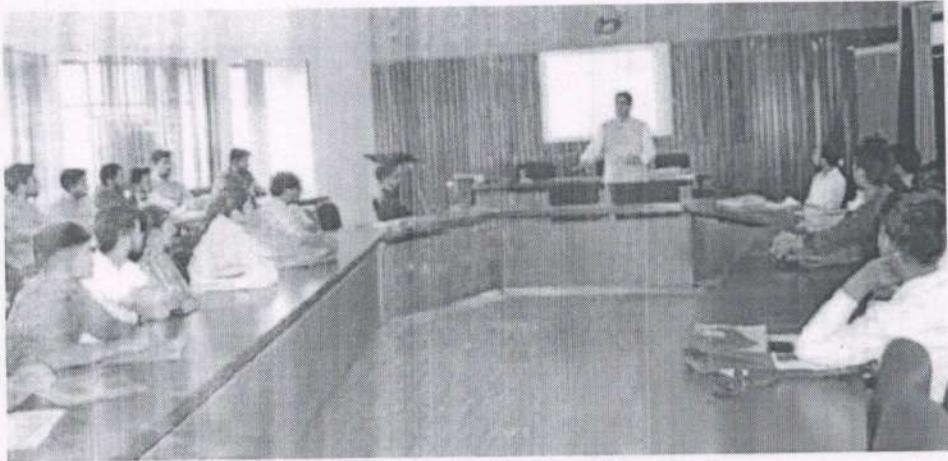
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
टूडे हिसार	11.11. 2021		

# एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समाप्त

टूडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय ट्रेनिंग उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में विस्तर शिक्षा निदेशक डॉ. रामप्रसाद के मार्गदर्शन में किया गया।

इस दोगुन वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मूल्यम वैज्ञानिकों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। व्यावक्रिया कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। बेतवल हरियाणा में लगभग 22 लिंगिन टन गेंहूं और धान का फसल लगभग 10 लिंगिन गेंहूं होता है। किसान आगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाजत दोगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रशिक्षण की समस्या भी कम होती है। भूमि की उर्वरक क्षमता में बदलाव भी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किया गया तथा बेरोजगार युवक



प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद प्रतिभागी।

### लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है।

वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौधे रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-युवतियां स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बेताब हैं। इनी कड़ी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर वे स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियों इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफेद बटन मशरूम (अक्टूबर से फरवरी), ढींगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धान के पुवाल की मशरूम (जुलाई से अक्टूबर) को उगाकर सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चूध, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ नवंबर २०२१	११. ११. २१	३	६

### एचएयू में होने वाला दीक्षांत समारोह स्थगित

हिसार | एचएयू में होने वाला 25वां दीक्षांत समारोह स्थगित कर दिया गया है। आगामी 17 नवंबर को दीक्षांत समारोह होना था। विवि प्रशासन भी समारोह की तैयारियों में जुटा हुआ था। पिछले छह साल से किसी कारणवशः एचएयू का 25वां दीक्षांत समारोह नहीं मनाया जा सका था। विवि प्रशासन ने 17 नवंबर को दीक्षांत समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया था। विवि सूत्रों के अनुसार किसी कारणवशः दीक्षांत समारोह को अभी स्थगित कर दिया गया है। आगामी तारीख अभी तय नहीं की गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२११५ - २०१२०	१२- ११-२१	२	१

### विश्वविद्यालयों की स्वायत्ता पर हमला नहीं होने देंगे

जास, हिसार: हरियाणा कृषि विविके गैर शिक्षक संघ के कार्यालय में आल हरियाणा यूनिवर्सिटीज एम्प्लाइज फेडरेशन के चेयरमैन एवं लुवासन्टिया प्रधान दयानंद सोनी की अध्यक्षता में बैठक हुई। इस बैठक में हौटा के प्रधान डा. पीके चहल, लुवास्टा के प्रधान डा. अशोक मलिक एवं हौटा के प्रधान दिनेश राड ने विचार रखे। जिसमें हरियाणा सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों की क्लास-२ एवं ग्रुप सी एंड डी की भर्ती अपने हाथों में लेने तथा कच्चे कर्मचारियों को लगाने की पावर भी हरियाणा सरकार द्वारा अपने हाथों में लेने के विरोध में रखे तथा कड़ा विरोध करते हुए सरकार को चेताया। दयानंद सोनी ने बताया कि सरकार विश्वविद्यालयों की स्वायत्ता बिल्कुल खत्म करने की कोशिश कर रही है।